शिकारी पौधे

दीपांजन घोष

शिकारी पौधे प्रकृति में अजूबा हैं। इनकी पोषण की विधि आम पेड़-पौधों से एकदम भिन्न होती है। मगर कथा-कहानियों में जैसा बताया जाता है, उस तरह से ये पौधे कभी शिकार नहीं करते। इनकी विशेषता है कि ये कीटों को फंसाने में माहिर होते हैं तथा इन्हें कीट भक्षी पौधे कहना बेहतर है। 1875 में चार्ल्स डार्विन ने वैज्ञानिकों का ध्यान इन कीटभक्षी पौधों की ओर आकृष्ट किया था।

कीट भक्षी पौधों को दो समूहों में बांटा जा सकता है - निष्क्रिय और सक्रिय। सक्रिय पौधों की पत्ती पर कोई कीड़ा बैठे तो फौरन यह पत्ती बंद हो जाती है, जैसे कि हम अपनी मुट्ठी बंद करते हैं। निष्क्रिय कीट भक्षी पौधों में कीटों के लिए एक फिसलन भरी ढलान होती है - यह घड़े नुमा एक रचना होती है। कीड़ा इस पर बैठे तो अन्दर फिसल जाता है। घड़े के अंदर उसे पचाया जाता है। इस घड़े के मुंह पर एक ढक्कन की भी व्यवस्था होती है। अलबत्ता, यह सम्भव है कि कुछ प्रजातियों में यह ढक्कन ही कीड़े को घड़े में गिराने का काम करता है। कीट भक्षी पौधों में कीड़ों को रिझाने के लिए कई तरह की व्यवस्थाएं होती हैं - भड़कीले रंग, मीठे रस और अन्य अजूबे।

एक सवाल यह है कि इन पौधों में सामान्य जड़-पत्तियां होने के बावजूद ये शिकार क्यों करते हैं? आम तौर पर ये पौधे बारिश में घुल जाने वाली, पोषक तत्वों के अभाव से ग्रस्त मिट्टी में पाए जाते हैं। या फिर नम व अम्लीय मिट्टी में भी पाए जाते हैं। इस तरह की दलदली मिट्टी में ऑक्सीजन की कमी होती है और इनमें कार्बनिक पदार्थों के आंशिक रूप से सड़ने के कारण कई अम्लीय पदार्थ बनते रहते हैं। इसलिए कार्बनिक पदार्थों को पूरी तरह विघटित करने वाले सूक्ष्मजीव इन जगहों पर नहीं पनप पाते। साधारण पौधे ऐसी अभाव की परिस्थिति में ज़िन्दा नहीं रह पाते। यहां कीट भक्षी पौधों की सफलता का राज़ यह है कि ये प्रकाश संश्लेषण के अलावा भोजन के लिए कीटों को भी दबोचते रहते हैं। इन कीड़ों की नाइट्रोजन प्रचुर काया इनके लिए पूरक आहार है। भारत में तीन कुलों के कीट भक्षी पौधे पाए जाते हैं - ड्रासरेसी, नेपेंथेसी और लेंटिबुलेरिएसी। आइए कुछ उदाहरण देखें।

ड्रॉसेरा कुल

इस कुल में 4 जीनस हैं और इनमें से दो (*ड्रॉसेरा तथा एल्ड्रोवेन्डा*) भारत में पाई जाती हैं।

ड्रॉसेरा को हिन्दी में मुखजली कहते हैं। यह एक नाज़ुक छोटी झाड़ी है जो बंजर ज़मीन और दलदली स्थानों पर पाई जाती है। इसकी एक प्रजाति (*ड्रॉसेरा पेलाटा*) मैदानी इलाकों के अलावा, पहाड़ियों पर 3000 मीटर की ऊंचाई तक पाई जाती है। एक अन्य प्रजाति *ड्रॉसेरा बर्मानी* है जो मुख्य रूप से पूर्वी व मध्य भारत तक सीमित है। *ड्रॉसेरा इंडिका* पश्चिमी तट के खुले स्थानों पर बारिश के मौसम में देखी जा सकती है।

ड्रॉसेरा की प्रजातियों में पत्तियां एक ही जगह से गुच्छे के रूप में निकलती हैं। कभी-कभी ये रैडिकल तरह से भी लगी होती हैं। कुछ प्रजातियों में पत्तियां लम्बी व पतली होती हैं जबकि कुछ में चौड़ी। ड्रॉसेरा की पत्तियों की ऊपरी सतह पर बारीक लम्बे रोम होते हैं जिन्हें टेंटेकल कहते हैं। इन पौधों में गुलाबी या बैंगनी फूल भी लगते हैं।

ड्रॉसेरा कैपेन्सेस